palm reading guide in malayalam

Download palm reading guide in malayalam

Webmaster!

INDIAN PALMISTRY FORUM

उन्मान मानगति संहति सारवर्णस्नेह स्वर प्रकृति सत्वनूकमादौ क्षे मृजां च विधिवत कुशलोऽवलोक्य सामुद्रविद्वदति यातनागतं ट

(श्री मद्वाराहमिहिराचार्य संहिता शास्त्रे)

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत ही सामुद्रिक शास्त्र व आख्यान भी विशद रूप में प्राप्त होता हैं, जिस शास्त्र में शरीर र्क ऊंचाई के मान का, शरीर के मान वजन का, चलने के ढंग का शरीरस्थ अवयवों की सांधयों का, कपालस्थ भेद सप्तरसादि के सार का शरीरस्थ हाथ, पैर, नखादिको के उन्नत, अवनत, दीप्त, अदीप्त आदि स्थिति को देखकर भावी शुभाशुभ अनुमान, वाणी, दंत, जिव्हा नेत्र, नख, वातादि प्रकृति विभेद, शरीर पर किस ग्रह का सत्व अधिक प्रदर्शित होता हैं । अंग प्रत्यंग हस्तावलोकन से शुभाशुभ फल मा (नियम) वर्णित रहता हैं तथा जिसमें करतलस्थ रेखा का विचार किय हुआ रहता हैं । उसको सामुद्रिक शास्त्र कहते हैं । ''सामु अंगलक्षण'' अर्थात आंग्ल भाषा में फिजिआनमी के अनुसार इसे शरी लक्षण विद्या भी कहते है । इस शास्त्र में वर्णित सूत्रों के अनुसार जातव (जीव) के शुभअशुभ, हानि-लाभ, रहन-सहन, बडप्पन, सामाजिव स्तर एवं अन्य विविध विषयों का परिज्ञान सुलभ ही दूर दृष्टिकोण र विदित हो जाता हैं । इस संदर्भ में ही हम कतिपय लक्षणों का प्रारूप आपके प्रति प्रस्तुत करते हैं ।

१) महापण्डित की पहचान - अनामिका तथा मध्यमा अंगुलिय चिपकी हुई होंवे । अनामिका अंगुली गोल अथवा पतली या चपटे होवें । कनिष्ठा का प्रथम पर्व और पर्वों से लम्बा हो, अन्य अंगुलिय चौकोनी होवें । बुध, शनि, रवि, गुरू तथा चन्द्र के पर्वत ऊंचे उ सुन्दर होवें । अंगुष्ठ का दूसरा पर्व लम्बा होवें । मस्तिष्क रेखा तथ आयुष्य रेखा परस्पर मिली हुई न होवें तथा सूर्य रेखा एवं मस्तिष्क रेख लम्बी होवें, यह शास्त्र का मर्मज्ञ महापण्डित प्रारूप में रहेंगा ।

२) सधान्य वकील की पहचान - महापण्डित सदृश गुरू लक्षण र तो ठीक ही, हैं इसमें भी वैशिष्ट्य यह कि जिस वकील की अंगुलिय लम्बी तथा चिपकी हुई हा, अगुंष्ठ भी लम्बा और सीधा होवें । मस्तिष्य रेखा सीधी स्पष्ट होवे, हथेली चपटी होने से वह जीव वकालत द्वार धनी रहेगा ।

३) उत्तम कृषक की पहचान - जिसकी मध्यमा अंगुली का दुसर पर्व अच्छा लम्बा हुआ रहे, एवं मध्यमा अंगुली ठीक लम्बी, विस्तृत रहे । हाथ कठिन तथा हथेली चौडी होने से वह शाश्वत कृषक एवं कृषि कर्म से लाभान्वित लाभ प्राप्त कर सकेगा ।

४) ईमानदार आदमी की पहचान - इसके लिए अनामिका अंगुली को देखना चाहिए, उसके द्वितीय पर्व से मूल तक उस पर्व पर ही यदि दो खडी रेखायें होवें । करतल विशेष चौडे होवे, हाथ पर अच्छा त्रिभुज हो तो आप इन चिन्हों को देखकर ऐसे चिन्ह वाले मनुष्य को ईमानदार तथा सच्चा मनुष्य जानें ।

५) डॉक्टर अर्थात् चिकित्सक की पहचान- जिसके हाथ पर मंगल बुध के पर्वत सुन्दर होवे, अंगुलियाँ लम्बी और गोल हों, अंगुलियों के अग्र चौकोनी हो, सभी अंगुलियों की दूसरी ग्रन्थि भी पुष्ट हो, हथेली दृढ होवें, बुध के पर्वत पर ३ या ४ खडी रेखायें हो अथवा मस्तिष्क (माथे) की तथा सूर्य की रेखा गहरी हो, साफ हो, तो वह मनुष्य शल्य चिकित्सा में कुशलतम रहेगा ।

६) डॉक्टर अर्थात् उत्तम दवा प्रदाता के योग - जिसके हाथ पर चन्द्र का पर्वत अधिक ऊँचा उठा हुआ मोटा होवे, सूर्य रेखा बलवान होवे वह रोगों पर रामबाण असर की दवा दे सकेगा । वे ही लक्षण वैद्य हकीम के हाथों में होवें तो वह भी प्रशस्त औषधि प्रदाता रहेगा ।

७) लक्ष्मीवान श्रेष्ठ पुरूष की पहचान - जिसका ललाट उन्नत प्रखर,अर्ध चन्द्र के समान होवे तथा मणिबन्ध से निकली रेखा शनि स्थान को यथार्थ स्पष्ट जावें, तो वह मनुष्य गुणवानं, युक्तियुक्त व्यवसाय कुशल तथा सम्पत्ति का अधिपति अर्थवान रहेगा ।

८) इंजीनियर की पहचान - जिसकी अंगुलियों के नोक मोटे हो, अंगुष्ठ छोटा होवें, अंगुलियां गोल तथा चपटी पतली होवें । हथेली चौडी तथा ग्रहों के पर्वत भी चपटे हों तो वह मनुष्य इंजीनियर रहे तथा कलकारखाने मशीनरी उद्योग में सफली भूत रहे ।

९) वायू सेनाध्यक्ष एवं समुद्री सेना के सैनिक - इसमें जिस व्यक्ति के हाथ की हथेली विस्तृत चौडी होवे तथा चन्द्र पर्वत मण्डल उन्नत होवे तो वह पुरूष नाव, जहाज या सामुद्रि कार्यकर्ता होता हैं ।

१०) उत्तम दलाल के लक्षण - जिसके हाथ में शनि व सूर्य की अंगुली एक लम्बाई की होवे, हाथ गोल, पतला, चपटा हो और मस्तक रेखा सीधी हो वह हुंडी दलाली का कार्य करने वाला रहे ।

११) राजदूत, विदेश गमन के योग एवं पहचान - जिसके हाथ में गुरू का मण्डल पर्वत ऊंचा होवे, सिर(मस्तिष्क) की रेखा उत्तम किन्तु कुछ-कुछ दुस्त्रावी होवे एवं बुध की अंगुली लम्बी व नुकीली हो तथा नख चमकीले होवे राजदूत पदासीन होने का योग पावे ।

१२) संगीतज्ञ-गायक- कुशल गायक के हाथ में अंगुलियाँ चौरस होती है अंगुठे का निम्नकोण चिन्हित और उसके ऊपर शुक्र मण्डल दृढ होगा । प्राय: संगीतज्ञ के हाथ में शुक्र के संस्थान (पर्वत) का ऊंचा उठा रहना राग मधुरता का कारक हैं । अंगुलियाँ सुकुमार कोमल रहे तो गायन कला में विशेष प्रगति करने वाला जीव रहे ।

१३) कुशल चित्रकार-कलाकार- जिसका हाथ बडा हो, अंगुलियाँ लम्बी होवे, सूर्य की अंगुली का प्रथम पर्व अच्छा पुष्ट होवे, वह चित्रकार रहकर व्यवसायशील रहता हैं । चन्द्र पर्वत (स्थान) की विशेषता से वह प्राय: काल्पनिक चित्र खींचे । जिन चित्रकारों की सूर्य अंगुली चौरस हो वह सत्य अथवा असलियत वाले चित्र खींचते हैं । शनि की अंगुली टेढी होने से तथा सूर्य की ओर झुकी हुई होने से रोगीले, उदास प्रकति

INDIAN PALMISTRY FORUM

चित्र व पशुओं के द्वन्द युद्धादि के चित्र खींचने में पटू, चुस्त सफलीभूत रहता हैं ।

१४) धर्माचार्य महन्त पादरी योग लक्षण - जिसके हाथ की अंगुलियाँ विशेष कर नजदीक-नजदीक रहती हों, बुध की अंगुली प्रधान कोणदार व नुकीली हो उसका प्रथम पर्व भी लम्बा हो । सूर्य की अंगुली उत्तम पुष्ट होवे, चन्द्र तथा शुक्र के पर्वत उन्नत एवं अंगूठा कमजोर हो, गुरू व शनि के बीच में लम्बी हृदय रेखा गई दिख पडती हो वे उच्च कक्षा के धर्माचार्य मनुष्य होते हैं ।

१५) साहित्य सेवक उपासक - साहित्य सेवक के हाथ में अच्छी पुष्ट कोणदार बुध की अंगुली होती हैं और उसकी प्रथम पौर लम्बी और सिर की रेखा अच्छी होती है, साहित्य समालोचक के नख छोटे होते हैं । गुरू की अंगुली प्रधान तथा चन्द्र मण्डल बहुत कम पुष्ट होता है ।

१६) अभिनेता, नाट्यकर्ता के उपलक्षण - जिसकी अंगुलियाँ चौकोनी हों, शुक्र का पर्वत ऊंचा उठा हुआ हो और उस पर गहरी रेखायें फैली हुई हो, मस्तक रेखा की एक शाखा बुध के पर्वत से मिली हुई हो तो वह कुशल नाटककार, अभिनेता तथा अपने कार्य में प्रवीण होता हैं ।

१७) जज(न्यायाधीश) का हाथ - जिसके हाथ की अंगुलियाँ लंबी व कोणदार हो और हृदय व मस्तिष्क कि रेखा के मध्यम भाग में चतुष्कोण होवे । बुध की अंगुली की प्रथम पौर लम्बी हो और गुरू की अंगुली सीधी हो, सूर्य का पर्वत उत्तम उठा हुआ हो वह मनुष्य कुशल, सार्थक, दयावान, न्यायाधीश तथा न्याय नीति का अच्छा ज्ञाता होता हैं ।

१८) आदर्श शिक्षक का हाथ - जिसके हाथ में गुरू, शनि, सूर्य व बुध इन चारों ग्रहों के पर्वत ऊंचे उठे हुये हों अंगुलियां लम्बी हो, उसके अग्रभाग मोटे हो और मध्यमा का दूसरा पर्वत लम्बा हो, सूर्य की रेखा उच्छी उठी हुई हो वह मनुष्य विद्याभ्यास कराने वाला आदर्श शिक्षक बनता हैं ।

INDIAN PALMISTRY FORUM

१९) अधिकारी, आफीसर, अनुशासक का हाथ - जिसके बाएँ हाथ की अंगुलियों की अपेक्षा दाहिने हाथ की तर्जनी व कनीनिका अंगुली अधिक अच्छी जोरदार हो और मंगल का क्षेत्र (हथेंली का मध्यभाग) अधिक ऊंचा उठा न हो, वह मनुष्य आफीसर कार्यकर्ता अधिकारी उच्च पदस्थ होता हैं ।

२०) रसायनवेत्ता, विज्ञान रूचि उपलक्षण - जिसके हाथ पर बुध पर्वत में से ऊपर की तरह छोटी-छोटी रेखा गयी हों वह रसायन तज्ञ होता हैं ।

२१) इंजीनियर, भवन निर्माण विशेषज्ञ - जिसकी अंगुलियों की नोकें मोटी जाड़ी हों और अंगूठा छोटा हो, हाथ कठिन (सुदृढ) अंगुली गोल, पतली व चपटी हो, हथेली चौड़ी तथा ग्रहों के पर्वत चपटे होंवे वह मनुष्य यंत्रज्ञ यानी जिसको अंग्रेजी में ''मेकेनिक'' व इंजिनियर कहते है । यह कुशल तथा सुदक्ष होता हैं । उसके हाथ में उपरोक्त लक्षण होवे तथा यदि हथेली नरम हो तो वह यंत्र (मशीनरी) बेचनेवाला व्यापारी होता हैं ।

२२) बैरिस्टर तथा लीडर न्यायवेत्ता वकील - क्रमांक २ के उपलक्षण भी होवें परन्तु उत्तरोत्तर विशेषता यह कि गुरू व शनि की अंगुली और सूर्य व बुध की अंगुलियाँ अलग अलग रहती हों और सूर्य की अंगुली पतली, चपटी तथा बुध की अंगुली की प्रथम पोर लम्बी और अन्य अंगुलियों की आकृति चौकोन होवें तथा चन्द्र, बुध, गुरू, सूर्य व शनि इन पांचो ग्रहों के पर्वत अच्छे ऊँचे उठे हुए हो, अंगुठे का दूसरा पर्व लम्बा हो और मस्तक रेखा आयु रेखा से न मिलती सर्व स्वतंत्र अलग गई हो, हाथ पर सूर्य रेखा व मस्तक रेखा लम्बी हो वह मनुष्य कुशल स्वकार्यदक्ष बैरिस्टर व लीडर होता हैं ।

२३) क्लर्क, सामान्य सर्विस के उपलक्षण - जिसके हाथ पर सूर्य का पर्वत अधिक ऊँचा उठा हुआ हो और वह उठा हुआ पर्वत अनामिका के नीचे ही हो यानी आस-पास हटा हुआ न हो तो वह मनुष्य क्लर्क का काम करने वाला होता हैं ।

२४) शिल्प कारिगर का हाथ - जिसके हाथ में गुरू का पर्वत अधिक ऊँचा उठा हो, अंगुलियां चौकोनी हो, सूर्य की अंगुली अच्छी सीधी लम्बी हो और उसका प्रथम पर्व भी लम्बा हो, सूर्य की रेखा उत्तम स्पष्ट दिखने वाली गुरू की अंगुली नोकदार (नुकीली) हो और चन्द्र का पर्वत उऊँचा उठा हुआ हो तथा गुरू, शनि की अंगुलियों में कुछ दूरी हो वह मनुष्य शिल्पज्ञ (अच्छा कारीगर) होता हैं।

२५)विशिष्ट डाक्टर (वैद्य), सर्जन (शास्त्रज्ञ) के उपलक्षण - जिसके हाथ में सूर्य की रेखा अधिक जोरदार हो, बुध का पर्वत अधिक ऊँचा स्पष्ट दिखनेवाला हो और उस पर छोटीछोटी खडी तीन रेखायें हो अंगुलियां लम्बी हो, अंगुलियों की प्रथम गांठ स्पष्ट होवें, सिर की रेखा उत्तम चन्द्र व शुक्र का पर्वत उत्तम स्थिति का हो वह वैद्य, डाक्टर, हकीम किसी प्रमुख रोग का विशेषज्ञ हैं । जिस डाक्टर के हाथ पर मंगल तथा बुध का पर्वत अधिक जोरदार व ऊँचा उठा हुआ हो, अंगुलिया लम्बी चौकोने अग्र की, गोल पतली व चपटी आकृति की हो, सब अंगुलियों की दूसरी ग्रन्थियां पुष्ट हो, मस्तिक एवं सूर्य रेखा स्पष्ट सबल होवे तो वह प्रथम श्रेणी का सर्जन रहें । जिस डाक्टर-वैद्य के हाथ पर चन्द्र का पर्वत अधिक ऊँचा उठा हुआ व मोटा हो और सूर्य की रेखा भी उच्छी स्पष्ट बलवान हो वह रोगों पर रामबाण औषधि प्रदान

INDIAN PALMISTRY FORUM

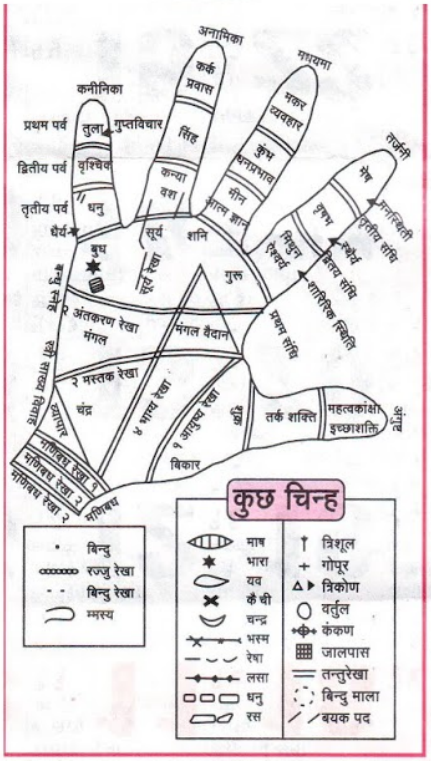

सामुद्रिक विषयक-सूत्र

हाथ को तथा हाथ के अंगुष्ठ को सभी पहचानते हैं । अंगुष्ठ से प्रथम अंगुली का नाम तर्जनी, द्वितीय अंगुली का नाम मध्यमा, तीसरी अंगुली का नाम अनामिका, चौथी अंगुली का नाम कनीनिका (कनिष्ठा) हैं। इन चारों अंगुली में एवं अंगुष्ठ में तीन-तीन टुकडे होते हैं और वहीं से इन चारों का पति हैं । इस प्रकार कुल ५ अंगुलियां मिलाकर चौदह टुकडे होते हैं । वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, राशि, ग्रह नक्षत्रों की कल्पना इन्ही पर्वों पर हैं । ज्योतिर्वद आधार पर बहुत कुछ भावी फल कहने में सफल होता हैं । हथेली में ग्रहों की कल्पना हैं । उसमें कनीनिका उच्च भाग गुरू का पर्वत होता हैं, अंगुष्ठ के नीचे शुक्र का पर्वत मध्य भाग में मंगल पर्वत, बुध पर्वत के नीचे कर मूल में चन्द्र पर्वत स्थान हैं । इस प्रकार सब ग्रह हाथ पर कल्पित हैं, इन पर्वतों के अच्छे बुरे गुणों से ग्रह भी अच्छे बुरे समझे जाते हैं तथा फल भी कहा जाता हैं ।

रत्न धारण

माणिक्य किसे धारण करना चाहिए - सूर्य काल पुरूष की आत्मा है से शास्त्रों में वर्णित हैं । यह पुरूष ग्रह ताम्र वर्ण के समान आभावान, पूर्व दिशा का स्वामी तथा पाप ग्रह हैं । सूर्य का विशेष रत्न णिक्य है । जिसकी जन्म कुण्डली में सूर्य का स्थान प्रबल हो, जिस कारण कि उसे हानि हो रही हो उसे माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए ।

मोती किसे धारण करना चाहिए - जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में 'चन्द्रमा' या तो निर्बल हो या दोष युक्त हो उसे मोती या इसके अन्य प्रतिनिधि द्रव्य को धारण करना चाहिए । इससे चन्द्रमा के द्वारा पड़ने वाला बुरा प्रभाव समाप्त होकर जीवन सुखदायी होता है।

मूंगा किसे धारण करना चाहिए - जिसकी जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह निर्बल व प्रभावहीन तथा दूषित होकर हानि पहुँचा रहा हो । उसे मूंगा (प्रवाल) या इसका अन्य उपरान्त धारण करना चाहिए ।

पन्ना किसे धारण करना चाहिए - ऐसा कहा जाता है कि पन्ना को हर व्यक्ति धारण कर सकता हैं । परन्तु जिसके जन्म कुण्डली में बुध ग्रह कमजोर या दोष युक्त हो तो वह व्यक्ति यदि पन्ना को धारण करता है तो उसका जीवन सुखमय होता हैं ।

पुखराज किसे धारण करना चाहिए - जिनकी जन्म कुण्डली में गुरू निर्बल हो या दोषयुक्त होकर अर्थात् जिनकी जन्म कुण्डली में गुरू की निम्नलिखित दोषपूर्ण स्थितियाँ पाई जाती हो उन्हे पुखराज धारण करना चाहिए ।

हीरा किसे धारना चाहिए - जिस व्यक्ति के जन्म कुण्डली में शुक्र ग्रह निर्बल हो या दोषयुक्त हो ऐसे लोगों को ही हीरा धारण करना चाहिए ।

नीलम किसे धारण करना चाहिए -जिसके जन्म कुण्डली में शनिग्रह या तो दुर्बल हो या दोषयुक्त हो उसे नीलम धारण करना चाहिए । यदि जन्म लग्न मेष, वृष, तुला अथवा वृश्चिक हो या शनि मेष राशि में स्थित हो । या शनि सूर्य की सिंह राशि में बैठा हो अथवा सूर्य की दृष्टि हो । अथवा जन्म कुण्डली में शनि ही प्रधान ग्रह हो ।

गोमेद किसे धारण करना चाहिए -जिन व्यक्तियों के जन्म कुण्डली में राहु की स्थिति शुभ न हो उन्हें गोमेद धारण करना चाहिए । इससे राहु का अशुभ प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव में वृद्धि होती है ।

वैदूर्य किसे धारण करना चाहिए- वैदूर्य 'केतु' ग्रह का रत्न है । अत: जिसके जन्म कुणडली में केतु ग्रह दुर्बल हो या दोषपुर्ण हो या अस्त हो उसे वैदूर्य धारण करना चाहिए ।

INDIAN PALMISTRY FORUM

INDIAN PALMISTRY FORUM

Religion. Hinduism is the largest religion in the state. Hinduism in Kerala is bit different to other parts of India, due to assimilation of traditional Dravidian.

The following article on the Jewish American Heritage Month celebration held on May 27th has been brought to us from the Jewish Chronicle‘s Ron Kampeas:

The word jackfruit comes from Portuguese jaca, which in turn, is derived from the Malayalam language term, chakka (Malayalam chakka pazham.

Located in Cassville, New York. Trains dogs in the new owner s home. Newsletter and donation information.

Learn Palmistry or chiromancy. Know diverse shape, mounts & different lines of palm and fingers, character traits through the study of palm reading.

Dasara (Devnagari: □□□□□□□□, Telugu: □□□□□□□□, Bengali: □□□□□□ □□□□, Gujarati: □□□□□□□□, Oriya.

FOR astrology courses online,palmistry,astrology readings CLICK THIS LINK ominous line palmistry palmistry education line triangle in.

The coconut tree (Cocos nucifera) is a member of the family Arecaceae (palm family). It is the only accepted species in the genus Cocos. [2] The term coconut can.

read more; A number of nomenclatural problems were uncovered while investigating the synonymy of B. flabellifer. The account of Borassus flabelliformis L. in Systema.

Your destination for all real estate listings and rental properties. Trulia.com provides comprehensive school and neighborhood information on homes for sale in your.